किसलय पटेल (हिन्दी विभाग, वैशाली महिला कॉलेज हाजीपुर)
दिनांक - 18.05.2020

प्रश्न — मल्लिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर — मल्लिका सेनापति बन्धुल की पत्नी है। वह आदर्श पतिपरायण स्त्री है। उसे अपने वीर पति के साहसिक कार्यों पर गर्व है। पति की सराहना करते वह थकती नहीं। उसमें पत्नीत्व का दिव्य रूप दृष्टिगत होता है। वह पति को प्यार करती है। उसके हृदय में पति के प्रति श्रद्धाभाव एवं अनुराग है। वह अपने पति को सुहाग की वस्तु मानती है, किन्तु यह स्वीकार करती है कि उनका अपना व्यक्तित्व है। उसकी पतिपरायणता वासनायुक्त नहीं है, बल्कि उससे वह मुक्त है। वह अपने ऐहिक सुखों को महत्व प्रदान नहीं करती।

उसमें कर्तव्य की बहुत ही निर्मल भावना है — 'महान हृदय को केवल विलास की मदिरा पिलाकर मोह लेना ही (उसका) कर्तव्य नहीं है।' जहाँ एक ओर उसके हृदय में निजी कर्तव्य का ज्ञान है, वहाँ दूसरी ओर वह अपने पति को कर्तव्य से विरत करना भी नहीं चाहती है। यही कारण है कि वह अपने पति को कठोर कार्य व्यस्त करने में प्रेरणा प्रदान करती है।

इसप्रकार मल्लिका के व्यक्तित्व में लोकहित की भावना अन्तर्भुक्त है। वह 'कठोर कर्मपथ में अपने स्वामी के पैर का कंटक नहीं होना चाहती', वह उसके अनुराग, सुहाग की वस्तु है। फिर भी बन्धुल का स्वतंत्र अस्तित्व है, जो शृंगार - मंजूषा

प्रश्न - ③

बन्द करके नहीं रखा जा सकता। इसीलिए जब उसे यह विदित होता है कि प्रसेनजित ने गुप्त रूप से बन्धुल की हत्या की योजना की है और जब उसे वापस बुला लेने की नेक सलाह रानी शक्तिमती से मिलती है तब वह निर्भीक एवं स्पष्ट शब्दों में कहती है "रानी! बस करो। मैं प्राणनाथ को अपने कर्तव्य से च्युत नहीं करा सकती, और उनसे लौट आने का अनुरोध नहीं कर सकती। सेनापति का राजभक्त कुटुम्ब कभी विद्रोही नहीं होगा और राजा की आज्ञा से वह प्राण दे देना अपना धर्म समझेगा। जब तक कि स्वयं राजा, राजद्रोही न प्रमाणित हो जाये।" मल्लिका के इस कथन से

पेज - (4)

उसका राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम परिलक्षित होता है।

मल्लिका में उपकार करने की भावना भी अन्तर्व्याप्त है। प्रसेनजित के कुचक्र एवं विरुद्धक के विश्वासघात से बन्धुल की हत्या होती है और मल्लिका सुहाग से वंचित हो जाती है। परन्तु उसमें प्रतिशोध तथा प्रति-हिंसा की भावना नहीं है, क्योंकि उसपर भगवान अमिताभ के उपदेशों का अधिक प्रभाव पड़ा है। वह इस वैधव्य-दुख को, जो नारी-जाति का कठोर अभिशाप है, सहन करने में समर्थ हो जाती है। इससे उसकी कष्ट-सहिष्णुता का अत्यन्त सुन्दर निदर्शन होता है। ऐसी विषम परिस्थिति में भी वह अपने कर्तव्य से च्युत नहीं होती है।

Scanned with CamScanner